सृष्टि के निर्माण में योगदान

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

प्रश्न उठता है कि सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ होगा? हर दिन सभी ने कुछ न कुछ किया होगा, यहाँ हर सेकण्ड जो कुछ भी हम सोचते व बोलते हैं उससे ही तो हमारी सृष्टि बनी होगी। सृष्टि तो हमें तभी ज़्यादा नज़र आती है जब वो हमें स्थूल रूप से दिखाई देने लग जाती है। यहाँ का एक छोटे से छोटा कार्य भी हमारी सभी चीज़ों को बहुत प्रभावित करता है। करेगा क्यों नहीं! क्योंकि हम बहुत रूसतम कण, अणु, परमाणु से निर्मित हैं। और हमारा उठना, बैठना, खाना, पीना, सब अणु परमाणु ही तो है। एक छोटा सा पार्टीकल जिसको हम परमाणु कहते हैं, एटम कहते हैं, जब दो या दो से अधिक परमाणु मिलते हैं तो एक अणु का निर्माण होता है। वही अणु फिर मल्टीप्लाई या जुड़कर कोशिका बना, फिर उसी से टिश्यू और फिर हमारे अंग बने।

आप सोचो आपके अंग तो मोटे हैं, आपको नज़र आ रहे हैं, वही अंग हैं। लेकिन इसके बनने और बनाने में योगदान किसका है? हमारा है। जो अति सूक्ष्म है वहाँ से इसकी शुरूआत होती है। फिर इस पर चिंतन चला कि वो पार्टीकल कितने प्रभावित होते होंगे हमारी सोच से! जैसे हमें हरा रंग, लाल गुलाबी रंग, सबके कपड़े अलग अलग क्यों दिखाई देते हैं। क्योंकि इनकी फ्रिक्वेंसी या आवृत्ति सभी से अलग अलग है। तभी हम कह पाते हैं कि यह लाल है, यह पीला है। इसी तरह इंसान की भी फ्रिक्वेंसी है तभी हम सभी को अलग कर पाते हैं नाम से! शरीर से! क्योंकि सभी ने जो शरीर बनाया है अपना उसमें अलग तरह की ताकत वाले या कमज़ोर वाले कणों का निर्माण कर शरीर रूपी सृष्टि बनायी। तभी हम कह पाते हैं कि आप मोटे हैं और आप कमज़ोर हैं। तो कमज़ोर की फ्रिक्वेंसी हमें वैसी ही नज़र आती है। जिसको कहा गया कि आकाश या शून्य के कारण हम पहचाने जाते हैं। यदि स्पेस या आकाश तत्व नहीं होता, तो शायद सभी को पहचान भी ना पाते।

हम सभी कुछ न कुछ तो योगदान कर ही सकते हैं। सृष्टि एक संयुक्त मिला हुआ प्रयास है, जिसमें हर प्राणी का सहयोग बहुत बहुत ज़रूरी है। अपको याद हो, यह सिर्फ यादगार है कि जब रामसेतु का निर्माण हो रहा था उस समय एक गिलहरी भी बार बार जाकर उसमें कुछ धूल के कण डाल कर आती! ये सिर्फ एक मिसाल के तौर पर है कि सृष्टि को चलाने की ज़िम्मेवारी हम सभी की है।

इसमें देखिए क्या हो रहा है कि पहले अव्यक्त, फिर सूक्ष्म, फिर स्थूल से सृष्टि बन रही है। उदाहरण के लिए जब हम सोने जाते हैं तो उस समय आप सोने से पहले बहुत सारे विचारों से घिरे होते हैं। मुझे ये करना है, मुझे वो करना है, लेकिन जैसे ही बिस्तर पर गए माना विचार अव्यक्त हो गए। लेकिन जब आप उठते हैं तो उठते ही सूक्ष्म विचार चलने लगते हैं। अरे यह काम मुझे उठके करना पड़ेगा। जैसे ही उस कार्य को हम अंजाम देते हैं तो वह स्थूल हो जाता है। यह है सृष्टि का निर्माण, आधार इसका क्या हुआ, इसका आधार हुआ (संकल्प)। जो अति सूक्ष्म है, जिससे आप इसको साकार कर पाते हैं। और यह कार्य रोज़ आप कर रहे हैं, एक नई सृष्टि का निर्माण, उसी तरह विनाश का कार्य भी चल रहा है। हमारा हर कोई संकल्प जो साकार में था, उससे हम जब ऊबते हैं, तो थोड़ी देर के लिए शांति का अभ्यास करते हैं अर्थात् संकल्प को सूक्ष्म से सूक्ष्म करते जाते हैं। और जब संकल्प सूक्ष्म हो जाते हैं तो आपको नींद आ जाती है। आप अव्यक्त हो जाते हैं। तभी हमको हमारे शिव बाबा कहते कि बच्चों, रात्रि में सारे दिन की दिनचर्या सुनाकर हल्के हो जाओ और आपने उन संकल्पों का विनाश किया जो आपके लिए ज़रूरी नहीं थे। क्योंकि वह उस दिन की सृष्टि थी, अब एक नई सृष्टि में फिर से बनानी है। अब आपको चिंतन करना चाहिए कि हर दिन जब हम सोने जाते हैं तो किस चिंता में सोते, और वही चिंता, वही डर, वही फिकर लेकर उठते। फिर से उसी सृष्टि को रिपीट करते हैं। इससे आप देखिए कितनी बुरी सृष्टि हमारी बन गई है! इसे ठीक करने का तरीका भी तो है ना! कि हर रात अपनी पुरानी सृष्टि जो आपने अपने द्वारा बनायी थी, उसे ही तो पूरी तरह से विनाश करना है। लेकिन इतनी अवेयरनेस नहीं है। आप चिंता में ही सोते। आप सोचिए, चिंता उस दिन की कहाँ से आई सोचा? कि फिर वह सूक्ष्म रूप से चिंता घर कर गई और हमारी सृष्टि चिंता वाली बन गई! तो इस प्रकार सूक्ष्म रीति से शांति, प्यार व पवित्रता के सूक्ष्म संकल्प द्वारा नई सुन्दर सृष्टि बनाने का प्रयास ही महानतम कार्य है।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

रोज़ दूसरों को सुख देने का पुण्य कर दुआयें अर्जित करो

प्रश्न : एक समय था जब हमारे पास सबकुछ था। घर, कारोबार, रुतबा, इज्जत, पर आज कुछ नहीं है। सन् 2000 में मैंने मकान बनाने के लिए कुछ लोन उठाया था। जिस कारण मैं कर्ज़ में दबा हुआ हूँ, जिनसे कर्ज़ लिया था उनको इज्जत के साथ वापिस देना चाहता हूँ। पर चाह कर भी नहीं दे पा रहा हूँ। किसी भी काम में मुझे सफलता भी प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया बतायें कि मैं क्या करूँ?

उत्तर : ऐसे में योग का प्रयोग बहुत सफल हो जाता है। देखिये आपके सामने जो विघ्न आये हैं और आपको बता दें कि विघ्न भी अचानक या बिना कारण नहीं आते। मनुष्य के पूर्व जन्मों का, नेगेटिव कर्मों का जो खाता है वो सामने आ गया है। इसलिए कहीं भी सफलता नहीं मिल रही। आपको ऐसा लगता होगा कि चारो ओर से द्वार बंद हो गये हैं। लेकिन मैं आपकी इस भावना को एप्रीशियेट करूंगा कि जिनसे आपने लिया हुआ है, उन्हें आप सम्मान सहित लौटा देना चाहते हैं। क्योंकि ये जो मनुष्य की नीयत है ना, ये यदि साफ होती है, देने की होती है तो आने लगता है सबकुछ। अगर मन के किसी भी कोने में ये भाव रहता है कि नहीं देना है, ऐसे बहुत लोग संसार में हैं जो ये भाव रखते हैं कि नहीं देना है इनके पास तो बहुत है, हम कहाँ से लायें, हम बच्चों को भूखे रखें क्या! नहीं देना है। कई दूसरे ऐसे अच्छे लोग होते हैं कि भले ही हमें कितना भी कष्ट हो हम सबका देंगे। उन्होंने हमें बहुत प्यार से दिया है और हम भी उन्हें बहुत प्यार से लौटायेंगे। उन्होंने हमारी आवश्यकता में मदद की थी, हम भी अब उनका वापिस लौटा देंगे। तो ये तो बहुत अच्छी चीज़ है। इन्हें दो काम करने हैं - एक तो पुण्य रोज़ करने हैं, दूसरों को सुख दें ताकि उनकी दुआएं मिलें। कोई ऐसा कर्म ना हो जिससे किसी की बद्दुआएं मिलें। इसमें विशेष ध्यान देना है। स्पीरिचुअली आपको शिव बाबा को भोग लगवा देने हैं सात बार, सात गुरूवार को। और तीसरा इनको एक विघ्न विनाशक भट्टी करनी है। पहले 21 दिन कर लें, फिर 21 दिन कर लें, फिर 21 दिन कर लें, तीन बार कर लें ये। अगर सभी ने ज्ञान योग सीखा है तो सभी कर लें। एक-दो ने सीखा है तो एक-दो कर लें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ। ये स्वमान हैं हमारे बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर संकल्प हैं। इन्हें पाँच बार याद करके, फिर एक घंटा राजयोग मेडिटेशन करें। और संकल्प करें ये जो हमारे जीवन पर, परिवार पर विघ्न आये हुए हैं ये सभी समाप्त हो जायें। तो एक इस योग की शक्ति से वो जो विकर्म सामने आ गये हैं, जो विघ्नों को जन्म दे रहे हैं, उन विघ्नों की दीवार टूटेगी और आपको रोशनी मिलती चली जायेगी। दूसरी चीज़ सवेरे चार बजे उठकर, अपने सबकॉन्शियस माइंड को कुछ संकल्प दें। उठते ही जैसे मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, मैं कर्ज़मुक्त हूँ, मेरे साथ तो स्वयं भगवान हैं, पांच बार करें। वो सब मार्ग आपे ही खोल देगा। बहुत सच्चे मन से ये रोज़ करेंगे तो जो बाधाएं आ रही हैं, जो ब्लॉकेज हो गई है, पैसा आने में रुकावट हो रही है, वो समाप्त हो जायेगी और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सबका पैसा दे सकेंगे। और आपका जीवन भी बहुत सुखी हो जायेगा।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : जो पशु-पक्षी और जीव-जन्तु हैं, जो जंगलों में रहते हैं, हमारे आस-पास रहते हैं, वो मृत्यु के बाद कहाँ जाते हैं? क्या इनका निवास स्थान भी परमधाम है? क्या ये भी जन्म-मरण के चक्र में मनुष्य आत्माओं की तरह ही आते हैं?

उत्तर : वास्तव में परमधाम तो सभी आत्माओं का निवास स्थान है ही। हर मृत्यु के बाद तो पुनर्जन्म होता ही है। लेकिन जब चारो युगों का अन्त होता है, जब महाविनाश हो जाता है तो ये सब जीव-जन्तुओं की आत्मा भी ऊपर ही चली जाती है। लेकिन परमधाम में बहुत सारे सेक्शन हैं, शास्त्रों में जिनको बहुत सारे लोक कह दिया है। देखो किसी को गौ लोक भी कह दिया है। जो सबसे महान आत्मायें हैं वो सबसे ऊपर, परमपिता सबसे ऊपर, तो फिर अच्छी आत्मायें, तो जैसे-जैसे उनका लेवल है आत्माओं का, वो उतना-उतना नीचे रहती हैं। तो ये पशु-पक्षियों की आत्मायें नीचे निवास करती हैं। और अपने समय पर पुनः इस धरा पर अवतरित होती रहती हैं।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

Contact e-mail : bksurya8@yahoo.com

आबूरोड- राज.। 63वीं जिला स्तरीय योगा और व्यायाम प्रतियोगिता में जिले के स्कूल के विद्यार्थियों को योगा प्रशिक्षण देने के पश्चात् योगाचार्य ब्र.कु. बाबूलाल को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय क्यारा की ओर से अथक सेवाओं के लिए अवॉर्ड देकर सम्मानित करते हुए प्रिंसीपल कमल किशोर पुरोहित।

रूरा-उ.प्र.। नवरात्रि पर आयोजित रथ यात्रा का स्वागत करते हुए एस.बी.आई. की मैनेजर सुचिता कौर। साथ हैं ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. विमलेश, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

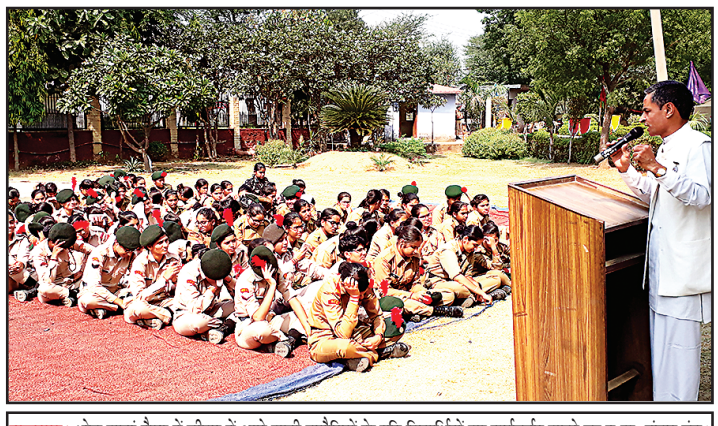

गुरूग्राम। भोरा कलां कैम्प में जीवन में आने वाली चुनौतियों के प्रति विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए ब्र.कु. संजय हंस।